जनतंत्र का आम आदमी

आम अदमी ही जनतंत्र की नीवं होता है पर हम उसकी स्थिति पर खास तौर पर भारत मे क्या है उसका जायका लेने की कोशिश करेगें इस लेख में।
आप कहीं भी चले जाइये पहला सवाल होगा आप हैं कौन? कहाँ से आयें हैं ? कैसे आयें हैं ? कपडे कैसे पहने है ? क्योकि आम आदमी से किसी को भी कोइ वास्ता नही हैं । पहले सवाल का बहुत ही सरल उत्तर है आम आदमी हूँ आप देख सकते हैं । दूसरे सबाल का जबाब अगर हुआ भदरौली से आया हूँ तो जबाब मिलेगा ठीक हैं,(मुझे आप पर ध्यान देने की कोई जल्दी नहीं है क्योकि आप आम आदमी हैं) ईसी बीच टेलीफोन की घन्टी बज गई तो आपकी हो गई छुटटी, क्योकि जो व्यत्ति फोन पर है वह आम आदमी नही है क्योकि बह फोन पर जो है बह आपकी काया से ज्यादा महत्व पूर्ण हैं । अब आप तीसरे सवाल का उत्तर देखें यदि आप को मैने कार या स्कूटर से उतरते नही देखा तो आप आम आदमी हैं (मुझे आप पर ध्यान देने की कोई जल्दी नहीं है क्योकि आप आम आदमी हैं)। चौथे सवाल का भी कुछ कुछ ऐसा ही जबाब होगा अब तक आप समझ ही गये होगें । भई मेरा काम अगर है जन की सेवा करना तो यह प्रशन ही कहाँ उठते हैं। सवाल यह होना चाहिये कि मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ पर यदि मैने यह मान ही रक्खा है कि अजनवी मेरे काम या आराम मे खलल डालने को ही आ रहा है तो मै कैसे अगान्तुक की मदद कैसे करुगाँ ? जब कि सच तो यह है कि आप कि कुर्सी ही इस साधारण जन की देन है । क्योकि जो अपना काम और तरह से निकालना जानता है वह आप तक आयेगा ही क्यो ?

माना की आप बहुत महत्व पूर्ण है पर जो आदमी आप तक, काया सहित पहुचाँ है उस पर ध्यान देना आपकी पहला फर्ज नहीं बनता क्या? टेलीफन बाला यह भी नही देख सकता कि आप क्या कर रहे है तब आप उसे कैसे अपना पहले कैसे महत्व दे सकते है । यही पर भारत मात खा जाता है और जगहो के मुकवाले । और आम आदमी बस उसकी तो पूछिये ही मत क्या हालत होती है, ज्यादा क्या लिखू आप सब मुक्त भोगी होगे ही किसी न किसी स्थिति में ।

पर अब समय आ ही गया है कि यह लिख दिया जाय कि आम अदमी कौन है - यदि आप अमुक पार्टी के सदस्य नही है,फलाना आपका रिश्तेदार नहीं हैं, आप नेता नही है, जोर से बोल नही सकते है, किसी की सिफारशी पत्र नही है, सफेद पोशाक नही पहने है, खादी नही पहनते हैं, किसी खास जाति के नहीं, आप के ईर्द गिर्द दो चार आदमी नही चल रहे हैं, आप स्थानिये भाषा बोल रहे है, अंग्रेजी नही बोल रहे है, और आप अपना परिचय मांगने से पहले नही दे रहे है, या कोई दो जने आपस मे बात कर रहें हैं और उन्हे आप बीच मे नही टोक रहे है,यदि आप अपने आप को महत्वपूर्ण को नही मानते है, आपको अपना उल्लू सीधा करना नही आता है, यदि आपको

नियमो का या अपने अधिकारो का अभास नही है, विदेश निवासी भारतिये मूल के, सफेद चमडी के विदेशी नही, आप नोटो की गडडी नही चमका रहे है,या आपने अपने आने के बाद पूरे आफिस के लिये चाय व समोसो का अडिर नही किया वह भी चपरासी को मिला के अपनी तरफ, या इलेक्शन का महोल नही, तो आप माने हुये आम आदमी है । यदि आपको आम अदमी की श्रेणी से निकलना है तो इनमे से एक न एक मुखोटा पहनाना ही होगा आज के भारतीय सन्दर्भ में यदि आप अपना काम बनाना चाहते हैं वह भी नियमोनुसार या आज की तारीख में ।आम आदमियो की संख्या करीब सत्तर करोड होगी जो तंत्र से प्रत्यक्ष रुप से नहीं जुडें हैं ।

आप जनना चाहेगे कि एसा क्यो है ? यह कोई गुप्त बात नही पर एसा होता आ रहा है और आगे होता रहेगा क्योकि आम आदमी जो ताकत ईलेक्शन के समय मे रखता है उसे पाचँ साल के लिये नेताओ के पास खो चुका होता है और जन सेवक वह सेवक कभी थे ही नही न उन्हे उसकी ट्रेनिग ही दी जाती है कि जन साधारण की सेवा के लिये ही आपको को कुर्सी पर वैठने का अधिकार मिला हैं । आम जन आपका ग्राहक है और आपने ग्राहक की कैसे सेवा की जाती है अमरीका मे देखें, अमरीका इसलिये क्योकि आज कल हम सभी चीजें अमरीका की देखा देखी कर रहे है, कृपया इंगलैन्ड से न सीखे वहाँ पर ग्राहक खडा रहता और तोलने बाला बैठा रहता हैं । जब जन साधारण को, ग्राहक की तरह हर जगह व्यवहार मिलेगा तो हालत बदलते देर नही लगेगी अपने देश भारत महान की । यह कोई अनहोनी बात नही कह रहा हू मै क्योकि आप खुद देखते होगे कि उस दुकानदार की दुकानदारी कितनी अधिक चलती है जो अपने ग्राहक का खयाल रखता हैं बह छोटे बडे वूढे अमीर गरीब जात बिरादरी ईत्यदि सभी को एक समान समझता हैं । अब आप यह भी कह सकते है कि ग्रहक तो पैसे देता है समान या सेवा के लिये, तो जन भी तो सरकारी सेवाओ के लिये जन सेवको को पहले से ही उनकी पगार मिलती है उन सेवाओ के लिये । पर भ्रष्टाचार ने उन मूल्यो पर परदा डाल रक्खा है । उस परदे को हटाना ही जनता की एकता ही कसौटी है जिस पर हम सबको खरा उतरना हैं ।

इसके लिये हो सकता है कि हम - जनता को हालातो को बदल लाने के लिये इस बात को अपने हाथ मे लेना होगा । सवाल उठता है क्यो न इन जन सेवको का घेराब किया जाय, यदि बह अपने उतरदायत्वि को सही मानो मे नही निभाते हो ? और उन्हे मजबूर किया जाय कि वह अपना दायित्व जनता के प्रति ही रखते हो, नेताओ या अपने फायदे के लिये ही पद का दुउपयोग न कर रहे हो । और कोई तरीका नजर नही आता है । यह काम कठिन जरुर हैं पर असम्भव नही हैं ।

उमेश रश्मि रोहतगी नौवी मीचिगन अमरीका आठ अगस्त दो हजार सात
Webpage : www.rurohatgi.com , email:rurohatgi@yahoo.com, ph: 248-471- 5786
Umesh Rashmi Rohatgi, 24161 Nilan Drive Novi MI 48375-3754 USA August 8th 2007